P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मैदानी तथा पहाड़ी क्षेत्रों का आक्रामकता पर प्रभाव

सुनीता
असिस्टेंट प्रोफेसर,
मनोविज्ञान विभाग,
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,रामपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य है मैदानी तथा पहाड़ी क्षेत्रों का आक्रामकता पर प्रभाव। इसके लिए मैदानी/पहाड़ी क्षेत्र के स्त्री/पुरुषों का चयन संयोगिक चयन (Random Selection) के आधार पर किया गया तथा सत्यता की जाँच के लिए निराकरणीय परिकल्पना (Null Hypothesis) का निर्माण किया गया एवं 2X2 द्वि–सूत्रीय प्रसरण विश्लेषण (Two way analysis of variance) द्वारा परीक्षण के परिणाम निकाले गए। निराकरणीय उपकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

मुख्य शब्दः आक्रामकता (aggression), पर्यावरण (Environment), प्रसरण–विश्लेषण (Analysis of variance), निराकरणीय परिकल्पना (Null Hypothesis), क्रम गुणित अभिकल्प (Factorial design)

प्रस्तावना

मानवीय व्यवहार में दो पक्ष पाये जाते हैं एक पक्ष उदारता तथा दूसरा पक्ष उग्रता। जिन व्यक्तियों में उदार प्रवृत्ति पायी जाती है उनके व्यवहार में भी उदारता पायी जाती है, लेकिन जो उग्र प्रवृत्ति के होते हैं उनमें आक्रामक व्यवहार देखे जाते हैं।

औद्योगिक, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण के कारण लोगों के सामाजिक जीवन में कई परिवर्तन देखे जा रहे हैं। अलगाव, आक्रोश, हिंसा, हत्या, आतंकवाद, हिंसा सम्बन्धी व्यवहार आधुनिक जीवन में आम बात है। उपरोक्त सभी परिस्थितियों में आक्रामकता एवं हिंसा एक सामान्य प्रवृत्ति है। आक्रामक व्यवहार एक सार्वजनिक घटना है। इसके अध्ययन में समाज मनोवैज्ञानिकों ने विशेष अभिरुचि दिखाई है। आक्रामकता का व्यवहार वह व्यवहार है, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति या व्यक्तियों को चोट पहुँचाना, पीड़ा देना या दण्ड देना चाहता है और इस प्रकार उसमें एक हिंसक प्रवृत्ति का जन्म होता है जो उसे आक्रामक बना देती है। अतः आक्रामक होने के लिए हिंसक होना जरूरी है, जब तक व्यक्ति हिंसक नहीं होगा वह आक्रमण नहीं कर सकता।

बस (1961) ने आक्रामकता को परिभाषित करते हुए कहा है,''आक्रामकता ऐसी अनुक्रिया है जो दूसरे प्राणी को एक अनिष्टक उद्दीपन प्रदान करता है।''

बारकोविट्ज 1975 के अनुसार आक्रामकता से तात्पर्य, ''दूसरों के प्रति किये गए साभिप्राय क्षति या हानि से होती है।'' इस परिभाषा से स्पष्ट है कि आक्रामक व्यवहार उस व्यवहार को कहा जाता है जो दूसरों को सिर्फ हानि या क्षति ही नहीं पहुँचाता बल्कि हानि या क्षति पहुँचाने का उद्देश्य भी रखता है।

बेरोन एवं बर्न (1987) के अनुसार ''आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार होता है जिसका लक्ष्य दूसरों को क्षति पहुँचाना या घायल करना होता है तथा जिससे बचने के लिए वह प्रेरित होता है।

मेयर्स (1988) के अनुसार ''आक्रामकता एक ऐसा शारीरिक या शाब्दिक व्यवहार होता है जिनका उद्देश्य दूसरों को चोट पहुँचाना होता है।''

आक्रामकता के सिद्धान्त

समाज मनोवैज्ञानिकों ने आक्रामकता की उत्पत्ति की व्याख्या करने के लिए तरह–तरह के सिद्धान्तों का वर्णन किया है।

इन सिद्धान्तों में आक्रामकता की उत्पत्ति के बारे में मुख्यतः तीन प्रकार के विचारों को प्रतिपादित किया गया है जो निम्नांकित हैः–

1. आक्रामक व्यवहार मानव प्रकृति में व्याप्त मूल प्रवृत्ति एवं अन्य जैविक कारकों के कारण उत्पन्न होता है। इसकी व्याख्या समाज मनोवैज्ञानिकों ने विशेष सिद्धान्त जिसे मूल प्रवृत्तिक सिद्धान्त कहा जाता है, के अन्तर्गत की है।
2. आक्रामक व्यवहार बाह्य कुण्ठा या निराशा के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है इसकी व्याख्या जिस सिद्धान्त के अन्तर्गत की है, उसे कुण्ठा–आक्रामकता सिद्धान्त कहा जाता है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

3. आक्रामक व्यवहार बाह्य कुण्ठा या निराशा के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है इसकी व्याख्या जिस सिद्धान्त के अन्तर्गत की है, उसे कुण्ठा–आक्रामकता सिद्धान्त कहा जाता है।
4. व्यक्ति आक्रामकता व्यवहार अन्य व्यवहारों के समान किसी न किसी सामाजिक सन्दर्भ में सीखता है, इसकी व्याख्या जिस सिद्धान्त के अन्तर्गत की गयी है,उसे सामाजिक–सीखना कहा जाता है। आक्रामकता की व्याख्या करने के लिए तीन महत्वपूर्ण सिद्धान्त हैं– 1 मूल प्रवृत्तिक सिद्धान्त, 2. कुंठा–आक्रामकता सिद्धान्त, तथा तीसरा सामाजिक सीखना सिद्धान्त, इस सिद्धान्त को सामाजिक–सीखना सिद्धान्त कहा जाता है।

पर्यावरण प्रदूषण

एक ओर निरन्त प्रगति की ओर अग्रसर विज्ञान व प्रौद्योगिकी का युग और दूसरी ओर महाविनाश की ओर जाता हुआ पर्यावरण यानि प्रदूषण। आधुनिक युग में सभी प्रकार का पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। पर्यावरण प्रदूषण का तात्पर्य है– मानवीय कारणों द्वारा स्थानीय स्तर पर पर्यावरण की गुणवत्ता में ह्रास जबकि पर्यावरण अवनमन के अन्तर्गत प्राकृतिक एवं मानव जनित दोनों कारणों से स्थानीय प्रादेशिक एवं विशेष स्तरों पर पर्यावरण की गुणवत्ता में गिरावट को सम्मिलित किया जाता है।

समस्या

क्या पहाड़ी क्षेत्र तथा मैदानी क्षेत्र की महिलाओं व पुरुषों का आक्रामकता पर प्रभाव पड़ता है?

उपकल्पना

Ho_1 पहाड़ी क्षेत्र की महिलाओं व पुरुषों के आक्रामक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

Ho_2 मैदानी क्षेत्र की तथा पहाड़ी क्षेत्र की महिलाओं व पुरुषों के आक्रामक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

Ho_3 मैदानी क्षेत्र की तथा पहाड़ी क्षेत्र की महिलाओं व पुरुषों के आक्रामक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

चर

स्वतन्त्र चर

पहाड़ी तथा मैदानी क्षेत्र की महिलाएं व पुरुष

आश्रित चर

आक्रामक व्यवहार की मात्रा

प्रतिदर्श

प्रस्तुत परीक्षण 40 प्रयोज्यों पर किया गया है, जिसमें 20 प्रयोज्य (10 महिलाएं व 10 पुरुष) पहाड़ी क्षेत्र तथा 20 प्रयोज्य (10 महिलाएं व 10 पुरुष) मैदानी क्षेत्र से सम्बन्धित हैं। प्रयोज्यों की आयु 20–24 वर्ष के बीच रखी गई। सभी प्रयोज्यों का चयन संयोगिक चयन से किया गया।

सामग्री

प्रस्तुत अध्ययन में कु0 रोमा पाल (Research scholar of Agra College, Agra) तथा डा0 श्रीमती तसनीम नकवी द्वारा निर्मित आक्रामकता मापनी का प्रयोग किया गया है।

विश्वसनीयता

प्रस्तुत मापनी का सह–सम्बन्ध गुणांक 0.82 है जोकि मापनी की उच्चस्तरीय विश्वसनीयता को दर्शाता है। परीक्षण पुनः परीक्षण विधि द्वारा आक्रामकता मापनी की विश्वसनीयता गुणांक 0.78 प्राप्त हुई।

वैधता

प्रस्तुत आक्रामक मापनी की वैधता गुणांक 0.74 है।

प्रस्तुत अध्ययन में निर्मित उपकल्पनाओं की सार्थकता की जाँच हेतु द्वि–सूत्रीय प्रसरण विश्लेषण विधि द्वारा ज्ञात की गई।

मध्यमान तालिका

लिंग	क्षेत्रीय	
	मैदानी	पहाड़ी
पुरुष	72.5	66.1
महिलाएं	68.5	65.3

तालिका

विचरण का स्रोत	SS	Df	Ms	F Ratio
पहाड़ी	57.6	1	57.6	1.61
मैदानी	230.4	1	230.4	6.46
पहाड़ी + मैदानी	25.6	1	25.6	0.0071
Within groups	1282	36	35.62	
Total (N- 1)		39		

P – Table = 0.05 = 4.12, 0.01 = 7.42

दण्ड आरेख (Bar Diagram)

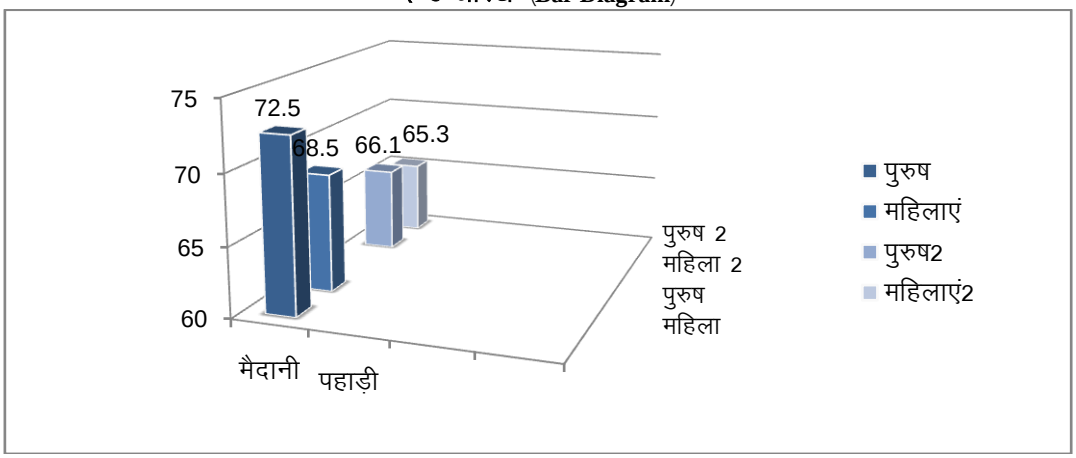

परिणाम व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन की समस्या थी क्या पहाड़ी क्षेत्र तथा मैदानी क्षेत्र की महिलाओं व पुरुषों के आक्रामक व्यवहार में अन्तर पाया जाता है? समस्या के आधार पर तीन उपकल्पनाएं निर्मित की गई। प्रथम उपकल्पना थी कि Ho_1 पहाड़ी क्षेत्र की महिलाओं व पुरुषों के आक्रामक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं होता है। Ho_2 मैदानी क्षेत्र की तथा पहाड़ी क्षेत्र की महिलाओं व पुरुषों के आक्रामक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं होता है। Ho_3 मैदानी क्षेत्र की अपेक्षा पहाड़ी क्षेत्र की महिलाओं व पुरुषों के आक्रामक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

उपकल्पना की जाँच हेतु द्वि–सूत्रीय प्रसरण विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया।

अध्ययन की प्रथम उपकल्पना ''पहाड़ी क्षेत्र की महिलाओं व पुरुषों के आक्रामक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं होता है'' स्वीकृत की गई। (F = -1-61, df = 1, P< .05) इसका मुख्य कारण अध्ययन के दौरान ही प्रस्तुत हुआ कि पहाड़ी क्षेत्र की महिलाऐं व पुरुष बड़े विनम्र स्वभाव के, दयालु व चतुर होते हैं। इस व्यवहार का एक मुख्य कारण पहाड़ी क्षेत्र का ठण्डा वातावरण तथा हरियाली भी है जो उनको हर समय खुश व तरोताजा रखने में मदद करती है।Seligman and Csikszentmihalgi 2006 के अनुसार पहाड़ी क्षेत्र से सम्बन्धित मानव में माफ कर देने की क्षमता मैदानी क्षेत्र से सम्बन्धित मानव से अधिक होती है। कारण है कि पहाड़ी क्षेत्र वाले मानव शारीरिक व मानसिक रूप से सक्षम होते हैं। इनमें आक्रामकता भी काफी कम मात्रा में देखी जाती है क्योंकि वहाँ पर सबसे बड़ा प्रभाव पर्यावरण का है। इससे स्पष्ट है कि पहाड़ी क्षेत्र में पर्याप्त रूप से शुद्ध पर्यावरण का होना है। जिस कारण वहां पर उच्च रक्तचाप, शुगर, अस्थमा हृदय सम्बन्धित आदि रोग बहुत कम मात्रा में देखे जाते हैं तथा देखा जाए तो यह जीर्ण रोग भी व्यक्ति में आक्रामक व्यवहार को उत्पन्न करते हैं। यही कारण है कि पहाड़ी क्षेत्र से सम्बन्धित महिलाओं व पुरुषों में आक्रामक व्यवहार ज्यादा नहीं पाया जाता है। अध्ययन की दूसरी परिकल्पना ''मैदानी क्षेत्र की महिलाओं व पुरुषों के आक्रामक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं होता है'' अस्वीकृत की जाती है। इसका मुख्य कारण है कि आम मैदानी (f= 6.46, df = 1, P>0.05)

मैदानी क्षेत्र अत्यधिक भीड़, कृत्रिम वाहन, उच्च तापक्रम जल तथा वायु प्रदूषण, शोर कोलाहल आदि कहीं न कहीं व्यक्ति में उच्च रक्तचाप उत्पन्न कर आक्रामक व्यवहार को बढ़ावा देता है। भारतीय मनोवैज्ञानिकों ने भीड़ की अनुभूति और उसके मनोवैज्ञानिक परिणामों का विशेष रूप से अध्ययन किया है। गाँव शहरों में पलायन के कारण शहर में भीड़ बढ़ती जा रही है और इसके फलस्वरूप न केवल भौतिक वातावरण बल्कि मनुष्य के स्वास्थ्य, सामाजिक कार्यकलाप और कार्यकुशलता आदि भी नकारात्मक ढंग से प्रभावित हो रही है।

आक्रामक व्यवहार को बढ़ाने में एक अहम भूमिका वैश्विक तपन यानि Global Warming की भी है उन्नीसवीं सदी के मध्य से वर्तमान समय तक वायुमण्डल में 25 प्रतिशत कार्बन डाईआक्साइड की वृद्धि हुई है। अधिकांश स्थानों में वैश्विक तपन के प्रभाव से गर्म दिन अधिक होने तथा ठण्डे दिन बहुत कम रह जायेंगे। विश्व मौसम विज्ञानी संगठन (World Metrological Organization) की रिपोर्ट के अनुसार 8 सबसे अधिक गर्म वर्षों के साथ 2000–2009 का दशक अब तक के आंकड़ों के अनुसार सबसे गर्म रहा है। कनाडा तथा रूस के उत्तरी ध्रुवीय वातावरण का ताप पिछले दशक के सापेक्ष विश्व औसत का दुगना हो गया विगत वर्षों में बांग्लादेश में समय–समय पर भयंकर समुद्री तूफान और आई बाढ़ से हजारों लोग मरे हैं। अमेरिका में केलिफोर्निया से लेकर हजारों लोग मरे हैं। अमेरिका में केलिफोर्निया से लेकर जैर्जिया तक सूखा पड़ा। देखा जाए तो मानव व्यवहार में आक्रामकता को बढ़ावा देने में पर्यावरण तथा मानव द्वारा उत्पन्न की गई वैश्विक तपन की एक अहम परन्तु घातक भूमिका है।

अध्ययन की अन्तिम व तृतीय उपकल्पना ''मैदानी क्षेत्र की अपेक्षा पहाड़ी क्षेत्र की महिलाओं व पुरुषों के आक्रामक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है सत्य सिद्ध हुई है।(f = 0.007, df = 1, P < .05) Mean Table देखने पर लेकिन मध्यमान की टेबल से अन्तर है भी ज्ञात होता है कि पहाड़ी क्षेत्र के पुरुषों का मध्यमान 66.1 तथा महिलाओं का मध्यमान 65.3 रहा परन्तु मैदानी क्षेत्र के पुरुषों का मध्यमान 72.54 तथा महिलाओं का मध्यमान 68.5 है जो शहरी क्षेत्र की महिलाओं व पुरुषों से ज्यादा है।

सन् 1968 में अमेरिका के दंगा आयोग की रिपोर्ट के अनुसार जब भौतिक वातावरण के तापमान में वृद्धि होती है तब समान अधिकार गरीब और राजनैतिक आदि विषयों पर लोगों में तनाव अधिक देखा जाता है और लोगों में अपेक्षाकृत आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। एक अध्ययन के परिणामों में सिद्ध हुआ है कि तापमान एवं आक्रामकता के बीच कोई प्रत्यक्ष प्रकार का तापमान सम्बन्ध नहीं होता है जब व्यक्ति कष्टदायक तथा उच्च स्तरीय तापमान में रहता है तो सम्भव है कि आक्रामकता की मात्रा में न्यूनता उत्पन्न हो जाए।

तापमान की अपेक्षा कोलाहल को मनोवैज्ञानिकों ने अधिक प्रत्यक्ष रूप से आक्रामकता से सम्बन्धित पाया है, समाज मनोवैज्ञानिकों ने यह परिणाम प्राप्त किया कि क्रोधित व्यक्ति वातावरण के मूल कोलाहल स्तर में वृद्धि कर दी जाये तो इससे उस व्यक्ति की आक्रामकता की मात्रा में वृद्धि हो जाएगी।

अध्ययन के उददेश्य

प्रस्तुत परीक्षण का उद्देश्य है कि मैदानी तथा पहाड़ी क्षेत्रों के पर्यावरण का प्रभाव आक्रामकता (aggression) पर पड़ता है।

निष्कर्ष

परिणामों को देखने से स्पष्ट होता है कि प्रयोग के प्रारम्भ में बनाई गई उपकल्पना सत्य सिद्ध होती है। लेकिन द्वितीय उपकल्पना 0.05 स्तर पर असत्य सिद्ध हुई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *एच0के0 कपिल, सांख्यिकी के मूल तत्व (सामाजिक विज्ञानों में) अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2, नवम् संस्करण 2000*
2. *डॉ0 डी0 एन0 श्रीवास्तव, पूर्व विभागाध्यक्ष एवं मान्यताप्राप्त अनुसंधान निदेशकः मनोविज्ञान विभाग, आगरा कालेज, आगराः प्रयोगात्मक विधियां एवं सांख्यिकी, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2 प्रथम संस्करणः 2013*
3. *अरुण कुमार सिंह; आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान प्रकाशनः मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स, प्रकाशित वर्ष 2006*
4. *अरुण कुमार सिंह; समाज मनोविज्ञान की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स, 01 जनवरी, 2008*
5. *डॉ0एम0पी0 कौशिक, (M.Sc.(Bot.), M.A. (Bio.) Ph.D] पूर्व अध्यक्ष वनस्पति विज्ञान विभाग, डी0ए0वी0 कालेज, मुजफ्फरनगर व डॉ0 राहुल कौशिक, M.Sc. (Bot), Ph.D., आधुनिक वनस्पति विज्ञान, प्रकाशनः प्रकाश पब्लिकेशन्स, 46 जिला परिषद बाजार, मुजफ्फरनगर (उ0प्र0)*
6. *डॉ0 चाँदनी सिंह, आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान*